चित्र: अतुल वर्धन

पागल

केशव दुबे

सुपरिचित कहानीकार। विगत तीन दशकों से नियमित लेखन। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कहानियां प्रकाशित। तीन कहानी-संग्रह। एक बाल उपन्यास प्रकाशित। ब्लॉग लेखन भी

''तू पागल तो नहीं हो गया करतार?''

''हां-हां, मैं पागल हो गया हूं...मेरा दिमाग चल गया है...मगर सुन लो सब यारों...मैं शादी बनाने जा रहा हूं, बस।''

करतार ने अपने हाथ में पकड़ी चिट्ठी हवा में लहराई। हवा भी जैसे, जहां-की-तहां थम गई। पूरे वर्कशाप में सन्नाटा छा गया। करतार ने लेथ मशीन का स्विच ऑफ कर दिया। घरघराहट बंद हो गई। वह तेल, मिर्च और कीच में सने हाथ में चिट्ठी का एक कोना पकड़कर, उसे पताका की तरह हवा में लहरा रहा था। सब उसे घेरकर खड़े थे। मंगल ने कटिंग मशीन में फंसे टीन के एक टुकड़े को वहीं छोड़ दिया। जमाल अपने हाथ में जाब पीस उछालता चला आया था। मदन के हाथ में थमा घन पूरी ऊंचाई तक उठा-का-उठा रह गया था। सब उसे मुंह बाए देख रहे थे।

ख़ामोशी जमाल ने तोड़ी, ''तू झूठ तो नहीं बोल रहा?'' करतार ने ठहाका लगाया। मदन अविश्वास के स्वर में बोला, ''चिट्ठी फर्जी तो नहीं?'' करतार मुस्कुराया, ''ले-ले...ये चिट्ठी देख ले। लिफाफा देख, सील मुहर देख...जालमसिंह नंबरदार, पिंडा कमालपुर...मुकाम, मौजा, तहसील, जिला सब देख ले। है ना मेरे इकलौते, सौतेले बाप दा खत? एक-एक हरफ बांच ले रू-ब-रू, गफलत ना रह जाए। ओऐ मदन...अपना घन नीचा कर...मेरे मत्थे पे गिरा, तो बिन ब्याही बीबी क्वारी रह जाएगी मेरे यार...।'' वह ठहाका मारकर हँस पड़ा।

पूरे वर्कशाप में सन्नाटा छाया था। अचानक जमाल ने जोश में भरकर करतार को बांहों में भींच लिया और गोल-गोल घूमता हुआ चिल्लाया, ''सुनो...सुनो यारो...अपने करतार की शादी होनेवाली है। कोई शको-शुबह नहीं। बात पक्की, सुबूत के साथ पक्की। आज शाम जश्न होके रहेगा...होके रहेगा। करतारे ज़िंदाबाद, वो कुड़ी ज़िंदाबाद...नहीं-नहीं...परजाईजी ज़िंदाबाद.।'' सबने ज़ोरदार तालियां बजाईं और गोल-गोल घूमता करतार...ओऐ...ओऐ करता रहा। मंगल बनावटी गंभीरता से बोला, ''करतारे, चालीस-पैंतालीस का तो तू है ही अभी? अब बीबी लाएगा? अब जाके अकल आई तुझे?''

करतार बारी-बारी से सबके चेहरे देखता रहा। ये चार बच्चों का बाप मदन...ये घरघुसा जमाल...बीबी के नाम हमेशा रोनेवाला मंगल...फुटपाथ से उठकर घरजमाई बना अनवर...मूंछों पर कलफ लगानेवाला शेरसिंह, जो घरवाली के आगे भीगी बिल्ली बन जाता है...ये हैं अकल के ठेकेदार, क्योंकि गृहस्थीवाले हैं। करतारे तो जैसे पागल है इनके लिए...उसके होठ फड़के, मगर उसने कहा कुछ नहीं। चिट्ठी मोड़कर जेब में रख ली और लेथ का स्विच ऑन कर दिया।

सब अपने काम में लग गए। करतार की आंखें मशीन में फंसे, गोल घूमते छल्ले पर जमी थीं, जिससे छिलकर महीन रेशे-जैसे लोहे के तार नीचे गिर रहे थे। करतार की आंखें उस पर टिकी थीं, पर वह किसी दूसरी दुनिया में खो गया था। आंखों के सामने उसका अतीत प्याज के छिलकों की तरह परत-दर-परत उतरता जा रहा था।

Scanned by CamScanner

पिंडा कमालपुर के स्टेशन रोड का एक खस्ताहाल मकान। कच्छा लपेटे, धूल-मिट्टी में सना पांच बरस का छोकरा, जो बाप की अर्थी के बगल में खड़ा था...मां का चौखट पर माथा ठोकना और उसे लिपटाकर गुहार मचाना, ''करमजले तुझे बाप की छाया नसीब ना हुई।''

फिर दूसरी चकाचौंध...बड़ी-बड़ी मूंछोंवाला डरावना चेहरा, मां की सहमी-सी आंखें...यह उसका नया बाप था- जालमसिंह नंबरदार। उसकी पीठ पर कमची तोड़ता स्कूल मास्टर... ''करतारे सबक याद ना किया, तो मार-मार के असली बाप याद करा दूंगा, समझा?'' उस रात सड़क पर लगा बिजली का बल्ब फोड़ता करतार।

एक नया अक्स उभरता है...उसकी मार खाकर मिट्टी का तेल डालकर जल चुकी मां और सहमा खड़ा वह। बाप की पिटाई...''अरे, रोता क्यों नहीं छोकरे?'' फिर एक दिन घर में आई सजी-संवरी औरत...''करतारे, अपनी नई मां के पैर छू।''

छल्ले की महीन किर्चें उतरती जा रही हैं...नई मां की गोद में किलकता गोल-मटोल पप्पू। उसकी हसरतभरी निगाहें, वह छोटे भाई को गोद में लेकर खिलाए...उसे गुदगुदाए...उछाले...उसके सुर्ख गालों पर हथेली फिराए...। एक बार जब छोकरे को अकेले में उसने गोद में उठा लिया था। वह थर-थर कांपने लगा था और बच्चा उसके हाथ से फिसल गया था। फिर बैल्ट की वार से बदन पर पड़ती सुर्ख धारियां...''तेरे को बोला था ना कोयला लेकर आ...इधर क्या कर रहा था...।'' उस रात करतार घर से भाग लिया था।

वह पहली बार अपने कमरे की एक-एक चीज को बड़े गौर-से देखने लगा। टूटी-सी चारपाई, मैला-कुचैला बिस्तर, जाला लगी दीवारें, बेतरतीब ढेर सारा सामान, ये घर है, इसे घर कह सकते हैं? ऐसे घर में आएगी उसकी बीवी

अचानक यादों का सिलसिला एक झटके-से टूट गया। जमाल उसकी लेथ मशीन का स्विच बंद करके उसके पास खड़ा हँस रहा था। उसके कंधे पर हाथ मारता बोला, ''बन्ने राजा...इतने खो गए हो शादी के ख़यालों में? कब से लगाए हो जाब पीस को मशीन में? जरा कैलीपर लगा के नाप तो लो।''

करतार झेंप गया। वह गुज़रे ज़माने की यादों में कितना खो गया था। उसने चमकते हुए छल्ले को मशीन से निकालकर हाथ में ले लिया। वह फिर सोचने लगा, जब वह घर से भागा था, तब से आज तक उसने कितनी ठोकरें खाई हैं और फिर जिस दिन सरदार तिरलोचन सिंह के इस वर्कशाप में उसे ठौर मिला, वह यहीं का होकर रह गया। यहीं उसने झाड़ू लगाने से काम शुरू किया और धीरे-धीरे मशीनों का काम सीखा। पर घर नाम की चीज़ को वह ज़ेहन से नहीं निकाल पाया। बरसों बाद पिछले साल ही चिट्ठी-पत्री की शुरूआत हुई। उसका सौतेला बाप, सौतेली मां, अनजाना-सा भाई, उस गांव में, बस्ती में, सब पराए हो गए थे। अतीत की यादों में कांटों के जंगल थे, मगर एक उम्मीद तो थी, शायद कहीं कोई दबी-छुपी ख़ुशबू हो, जो कभी उजागर हो सके। चिट्ठियों का सिलसिला शुरू हुआ, तो उसने बूढ़े के नाम मनी-ऑर्डर भेजना शुरू कर दिया। जवाब में ढेर-से आशीष आने लगे। यहां उसके दोस्त कहते, करतार पागल है, क्यों ढो रहा है ज़बरदस्ती के रिश्ते? क्या रखा है अब उसका उस बस्ती में? क्या इतनी ज़िल्लत, बेइज़्ज़ती और नरक कम था, जो उसने बचपन में झेला था? उसे अब यहीं इसी शहर में नई ज़िंदगी शुरू करनी चाहिए। सब कुछ भूल जाना चाहिए।

यहां अच्छा कमा-खा रहा है, कमी किस बात की है? करतार हाथ झटकारता बाहर आ गया। उसका मन आज काम में नहीं लग रहा था। अपनी खोली पर पहुंचकर उसने चिट्ठी तकिए के नीचे रख दी। वह पहली बार अपने कमरे की एक-एक चीज़ को बड़े ग़ौर-से देखने लगा। टूटी-सी चारपाई, मैला-कुचैला बिस्तर, जाला लगी दीवारें, बेतरतीब ढेर सारा सामान, ये घर है, इसे घर कह सकते हैं? ऐसे घर में आएगी उसकी बीवी? उसने तो कभी सोचा नहीं था। उसने चारपाई के नीचे से ट्रंक निकालकर देखा। बरसों से पैसे जोड़कर उसने एक-एक सामान इकट्ठा किया था। गहने, कपड़े, साड़ियां- भले वह छड़ा-छांट था, मगर कभी तो होनी ही थी शादी। वह सोच में डूब गया। पैसे उसके पास हैं, कमी पड़ी तो यार-दोस्तों से ले लेगा, नहीं तो तिरलोचन पापाजी किस दिन के लिए हैं? उसने सब सामान जमाकर ट्रंक में रखा, और मोटा ताला जड़कर उसे फिर चारपाई के नीचे खिसका दिया। काफी काम है अभी, कमरे की झाड़पोंछ करनी है, सब कुछ तरतीब से जमाना है, पर्दे दूसरे चाहिए, बर्तन, बिस्तर और क्या-क्या...? हो जाएगा सब, वह आइने के सामने खड़ा होकर खुद को निहारने लगा। बुरा नहीं दिखता वह- हां, वक़्त की मार ने चेहरे पर छाप छोड़ दी है। बालों के बीच कहीं-कहीं चांदी-जैसे चमकदार तार से झलकने लगे हैं, मगर इससे क्या? उसने सिर को झटका दिया। उसने बचपना भोगा ही नहीं, जवानी देखी ही नहीं, ऐसे कहीं बुढ़ापा आता है भला? किस ख़याल में खो गया वह? तभी तो यार-दोस्त कहते हैं-करतारे पागल है-एकदम पागल।

वह बिस्तर पर लेट गया। तकिए के नीचे से चिट्ठी निकाली। बार-बार चिट्ठी पढ़ते हुए वह गुनगुनाने लगा-

''गड्डी आ गई टेशन ते
सानू माहिया वेखन दे।''

दूसरे दिन उसने डाकखाने से रुपये निकलवाए, यार-दोस्तों से इकट्ठे किए। जब छुट्टी के लिए मालिक तिरलोचन सिंह के पास पहुंचा, तो वे हँसकर बोले, ''देर आयद दुरुस्त आयद। तो तू शादी करने जा रहा है पुत्तर? रुपये-धेले हैं पास में? कुछ कमी हो तो बोल।''

उसने पांव छूकर कहा, ''बस जी। आपका आशीर्वाद चाहिए पापाजी।''

उसे ट्रेन पर छोड़ने सब आए। जमाल ने उसकी पीठ ठोकी, ''शादी के बाद लौटेगा भी या उधर ही जाब पीस बनकर रह जाएगा?'' वह मुस्कराता रहा। ट्रेन चली, तो सब हाथ हिलाकर विदा दे रहे थे। मंगल चिल्लाया, ''जा करतारे फतह हो। लौटकर आएगा, तो शानदार दावत लेंगे हम सब।'' वह पीछे मुड़कर हाथ हिलाता रहा। देखता रहा इस शहर को, जब तक चिमनियों से उठता धुआं आसमान में दिखता रहा।

दो हफ़्ते बाद अचानक एक दिन सरदार तिरलोचन सिंह के वर्कशाप में खलबली मच गई। मदन ने घोषणा की, करतार लौट आया है। बीवी

Scanned by CamScanner

नहीं आई साथ में। शाम को सब यार-दोस्तों को अन्नपूर्णा में दावत पर बुलाया है। पापाजी के नाम भी शामिल होने का संदेशा भेजा है। दिनभर वर्कशाप में करतार की ही चर्चा होती रही।

शाम को सब शहर के मशहूर होटल अन्नपूर्णा में इकट्ठे हुए। शानदार इंतज़ाम किया गया था। करतार सबसे खुशी-खुशी हंस-बोल रहा था। दोस्तों ने सवालों की झड़ी लगा दी। मगर वो सब सवालों का एक ही जवाब दे रहा था, ''पहले दावत कुबूल फरमाइए, फिर बातें होती रहेंगी।'' ऐसे आदमी का इलाज भी क्या था भला?

खा-पीकर जब सब उसे घेरकर बैठे, तो जमाल खीझकर बोला, ''अब तो बता दे करतारे, बीबी को क्यों छोड़ आया वहां? वहां था क्या तेरा। हमें सब मालूम है। उस नरक में छोड़कर आने की क्या ज़रूरत थी?''

सवालों की झड़ी लग गई।

-बाप ने इजाजत नहीं दी? उसी जालम सिंह ने?

-उसके चेहरे-मोहरे में खोट है?

-वो कानी है?

-ऐंचकतानी है?

-या हमें नहीं दिखानी है? कुछ तो बोल।

करतार ने एक ज़ोरदार ठहाका लगाया, फिर धीरे-से बोला, ''मेरी शादी हुई ही नहीं।''

कमरे में जैसे बम फूटा हो-सब भौंचक-से करतार को देखते रहे। बड़ी मुश्किल से सुखदेव के बोल फूटे, ''क...क्या-क्या? क्या हो गया? और ये दावत कैसी?''

करतार हँस पड़ा, ''मेरे छोटे भाई पप्पू की शादी थी। क्यों, क्या मैं भाई की शादी की दावत नहीं दे सकता?'' जमाल ने करम ठोक लिए, ''तू तो कुछ भी कर सकता है पगले। मगर अकल के दुश्मन, तू तो अपनी शादी के लिए गया था ना?''

करतार वैसे ही हँस रहा था, ''हां, गया तो था। उधर गांव पर पहुंचा, तो छोकरे के टंटे का पता लगा। जिस गोल-मटोल छोकरे को छोड़कर मैं भागा था, वो तीस बरस का गबरू जवान हो गया था। पड़ोस की एक

शाम को सब शहर के मशहूर होटल अन्नपूर्णा में इकट्ठे हुए। शानदार इंतज़ाम किया गया था। करतार सबसे खुशी-खुशी हंस-बोल रहा था

लड़की के इश्क में गले-गले डूबा था। बात खुल गई थी और लाठी-फरसे तन गए थे दोनों तरफ। मैंने पप्पू को एक तरफ ले जाकर सारा माजरा पूछा, गधा, पाजी, छै फुटिया जवान...मेरे गले लग के फूट-फूटकर रोने लगा।

''फिर?'' अनवर ने गुस्से से पूछा।

फीकी हँसी हंसता करतार बोला, ''फिर क्या, रात की गाड़ी से दोनों को बिठाकर भगा दिया। जेवर, कपड़े-लत्ते, रुपये-पैसे सब दे दिया और कह दिया-जाओ मनहूसों इत्ता बड़ा मुल्क़ पड़ा है। कहीं अनजानी जगह जाकर नई ज़िंदगी शुरू करो। जीते-जी पिंडा कमालपुर की दिशा में मुंह ना करना। और मैं दूसरी गाड़ी से वापिस इधर आ गया-हाथ झुलाते।'' ''तू बिना पैसे के आया कैसे?'' रनवीरे चिल्लाया। ''वैसे ही, जैसे तीस बरस पहले आया था।'' करतार धीरे-से बोला।

सब उस पर टूट पड़े। उसे गाली दे रहे थे, खीझ रहे थे, चिल्ला रहे थे। सरदार तिरलोचन सिंह ने बीच-बचाव किया, ''चल करतार तुझे अपनी गाड़ी में घर छोड़ देता हूं।'' वह दोस्तों की गुस्सेभरी, खीझभरी नज़रों को झेलता चला गया। रास्ते में तिरलोचन सिंह बोले, ''तू पागल तो है करतार, इसमें कोई शक नहीं।''

करतार धीरे-से बोला, ''हो सकता है पापाजी। दरअसल उस छोकरी को हमल था। अब या तो एक ज़िंदगी धरती पर ना आती, और आती तो उसे नरक नसीब होता। पापाजी, मैं पप्पू को कभी गोद नहीं खिला पाया, उसकी औलाद को तो खिलाऊंगा। मैंने उन मनहूसों को ताकीद कर दी है-रहें चाहे जहां भी, बच्चा हो तब मुझे ख़बर कर दें। मैं फौरन आ जाऊंगा। मैं नरक भोगा हूं, वो ना भोगें।''

तिरलोचन सिंह उसका मुंह देख रहे थे। वह फिर हँस पड़ा और बोला, ''पापाजी एक विनती है, वो आपके ड्राइंगरूम में एक कैलेंडर टंगा है, टी.वी. वाला, जिसमें एक गोल-मटोल बच्चा बना है, वो मुझे दे दीजिए, बड़ी तस्वीर है। रोकिए...रोकिए, मेरा घर आ गया।''

एम. आई. जी.-2/26,साडा कॉलोनी, पी.ओ./ जमनीपासी-45940 कोरबा (छ.ग.)

Scanned by CamScanner